अबदी जिंदगी
कैसे पाऊँ?

abadī zindagī kaise pāūṅ?

How can I Obtain Eternal Life?

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 21]

(Urdu—Hindi script)

© 2024 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is derived from JooJoo41
https://pixabay.com/illustrations/man-stairs-heaven-steps-clouds-5826096/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

ख़ुदा को जलाल दो	3
नूर में चलो	5
अपने ईमान को बढ़ने दो	6
पूरा भरोसा रखो	7
उसे क़बूल करो जो ज़िंदगी है	9
इनकार करनेवालों का जवाब	14
इंजील, यूहन्ना 11,1-54	15

► **क्या आपने कभी सोचा कि मौत के बाद क्या होगा? क्या मैं अल्लाह तआला को मंज़ूर हूँगा? क्या मैं जन्नत में दाख़िल होने लायक़ हूँगा?**

इंजीले-शरीफ़ में हमें इसका साफ़ जवाब मिलता है कि हम किस तरह अबदी ज़िंदगी पा सकते हैं।

यरूशलम के क़रीब एक गाँव था। उसका नाम बैत-अनियाह था। गाँव में दो बहनें अपने भाई के साथ रहती थीं। बहनों के नाम मर्था और मरियम थे, भाई का लाज़र। तीनों ईसा मसीह के शागिर्द थे। वह उसे बहुत अज़ीज़ रखते थे। एक दिन भाई बीमार पड़ गया। जल्द ही पता चला कि यह आम बीमारी नहीं है, यह मोहलक मरज़ है। लाज़र की हालत बिगड़ती गई तो बहनें परेशान हो गईं। अब क्या करें?

तब बहनों को ईसा मसीह का ख़याल आया। क्या उसके कहने पर लातादाद मरीज़ों को शफ़ा नहीं मिली थी? क्या वह मदद नहीं करेगा? लेकिन ईसा मसीह वहाँ नहीं था। वह दूर, दरियाए-यरदन के पार ख़िदमत अंजाम दे रहा था। पहुँचने में तो एक या दो दिन लगते थे। शायद लाज़र उतने में कूच कर जाए। ख़ूब कहा गया है कि डूबते को तिनके का

सहारा। बहनों ने उम्मीद का यह तिनका पकड़कर फुरती से इत्तला भेजी कि "ख़ुदावंद, जिसे आप प्यार करते हैं वह बीमार है।" दोनों बहनों को एक बात का पूरा यक़ीन था : ईसा मसीह हमारी सुनता है। ईसा मसीह हमारी फ़िकर करता है। वह हमेशा हमारे दुख और सुख में शरीक होता है।

जब ईसा मसीह को यह ख़बर मिली उस वक़्त वह ख़ाली हाथ तो नहीं बैठा था। हमेशा की तरह वह अपनी ख़िदमत में मसरूफ़ था। मरीज़ आते-जाते थे और वह भीड़ से घिरा रहता था।

► **लोग क्यों उसका पीछा नहीं छोड़ते थे?**
उसका किरदार और तालीम अनोखी थी। लोग सब कुछ छोड़कर भाग आते थे। यह आम आदमी नहीं था। उसे ख़ास इख़्तियार हासिल था।

जब ईसा मसीह को यह ख़बर मिली तो उसने फ़रमाया,

> इस बीमारी का अंजाम मौत नहीं है, बल्कि यह अल्लाह के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इससे अल्लाह के फ़रज़ंद को जलाल मिले। (यूहन्ना 11:4)

► **इस बीमारी का अंजाम मौत नहीं है : इससे वह क्या कहना चाहता था?**

वह जानता था कि लाज़र मरनेवाला है। थोड़ी देर बाद वह वफ़ात पाएगा। लेकिन वह मौत के क़ब्ज़े में नहीं रहेगा। वह ईसा मसीह के कहने पर दुबारा ज़िंदा हो जाएगा।

► **इससे किस को जलाल मिलेगा?**

पहले ख़ुदा बाप को और दूसरे उसके फ़रज़ंद ईसा मसीह को। ईसा मसीह लाज़र को ज़िंदा करेगा मगर अपने आपको बड़ा करने के लिए नहीं। इस काम से ख़ुदा बाप को जलाल मिलेगा। इससे हम एक अहम उसूल सीखते हैं :

ख़ुदा को जलाल दो

► **जलाल देने का क्या मतलब है?**

जलाल देने का मतलब यह है कि हम उसकी इज़्ज़तो-एहतराम करें। न सिर्फ़ अपनी बातों से बल्कि अपनी ज़िंदगी से भी। हर काम जो ईसा मसीह करता वह इसलिए करता था कि ख़ुदा बाप को जलाल मिले। और क्या अजब। जो ताल्लुक़ ख़ुदा बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के दरमियान है वह बहुत गहरा है। इस यगांगत की बिना पर ईसा मसीह का हर क़दम, हर साँस ख़ुदा बाप का जलाल बढ़ाने के लिए था।

► **क्या आप अपनी ज़िंदगी से ख़ुदा को जलाल देते हैं? या क्या आपकी ज़िंदगी को देखकर लोगों को घिन आती है?**

अगर आपका ईमान सच्चा हो तो आपकी ज़िंदगी ख़ुद बख़ुद इसकी गवाही देगी।

शागिर्द मसीह की यह बात समझ न पाए। वह मुतमइन हुए। उन्होंने सोचा, चलो बंदा ख़ुद बख़ुद ठीक हो जाएगा। वह रवाना न हुए बल्कि दो और दिन वहीं ठहरे रहे। फिर ईसा मसीह ने फ़रमाया, "आओ, हम दुबारा यहूदिया चले जाएँ।" शागिर्द दंग रह गए।

► **वह क्यों दंग रह गए?**

वह बोले, "उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहूदी आपको संगसार करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?" वह तो यरूशलम शहर से इसी लिए चले गए थे कि वहाँ के बुज़ुर्ग नाराज़ थे। बुज़ुर्ग उस्ताद को पकड़ना चाहते थे क्योंकि वह नहीं मानते थे कि वह आनेवाला अल-मसीह है। साथ साथ उन्हें यह डर था कि कहीं इससे हमारी अपनी कुरसी हिल न जाए। कैसी बात। वह सच्चाई को क़बूल नहीं कर सकते थे क्योंकि उनके लिए उनकी अपनी इज़्ज़त सब कुछ थी।

शागिर्द परेशानी से उस्ताद को ताकने लगे। तब ईसा मसीह ने उन्हें एक और बात सिखाई। यह कि

नूर में चलो

उसने फ़रमाया,

> क्या दिन में रौशनी के बारह घंटे नहीं होते? जो शख़्स दिन के वक़्त चलता-फिरता है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्योंकि वह इस दुनिया की रौशनी के ज़रीए देख सकता है। लेकिन जो रात के वक़्त चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्योंकि उसके पास रौशनी नहीं है। (यूहन्ना 11:9-10)

► **जो दिन के वक़्त चलता है। दिन के वक़्त चलने का क्या मतलब है?**

अब तक दिन का वक़्त है। दिन के वक़्त इनसान चल-फिर सकता है। मेरे बाप ने दिन का वक़्त भी मुक़र्रर किया है और रात का वक़्त भी। मैं दुनिया का नूर हूँ। जब तक मैं साथ हूँ तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है।

मेरे अज़ीज़, क्या आपने यह नूर पाया है? जो नूर के बग़ैर चले वह मुख़लिफ़ चीज़ों से टकराता रहता है। उसे चोट लगती रहती है।

► **चोट क्यों लगती है?**

इसलिए कि वह ख़ुदा का रास्ता देख नहीं सकता। वह कभी बाई तरफ़ भटकता है, कभी दाई तरफ़। जो रास्ता सीधा अबदी आराम तक ले जाता है उसे वह नहीं देखता।

अब ईसा मसीह ने एक तीसरी बात सिखाई :

अपने ईमान को बढ़ने दो

उसने कहा, “हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जाकर उसे जगा दूँगा।”

शागिर्दों ने कहा, “ख़ुदावंद, अगर वह सो रहा है तो बच जाएगा।” अगर वह आराम से सो रहा हो तो इसका मतलब है बीमारी घटनेवाली है और वह ठीक हो जाएगा। लेकिन उस्ताद ने उन्हें साफ़ बता दिया,

> लाज़र वफ़ात पा गया है। और तुम्हारी ख़ातिर मैं ख़ुश हूँ कि मैं उसके मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्योंकि अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उसके पास जाएँ।
> (यूहन्ना 11:14-15)

► **ईसा मसीह क्यों ख़ुश था?**
इसलिए कि शागिर्द ईमान लाएँगे।

► **क्या वह ईमान नहीं लाए थे?**
ज़रूर। देखें बात यह है : जब हम ईमान लाते हैं तो हमारा ईमान बीज जैसा छोटा होता है। उसे बढ़ाने की ज़रूरत होती है ताकि वह जड़ पकड़े, उग आए और बढ़ते बढ़ते फल लाए। उस्ताद ख़ुश है कि लाज़र के पास जाने से शागिर्द का कमज़ोर ईमान मज़बूत हो जाएगा।

शायद आपके दिल में ईमान का यह बीज डाला गया है। क्या आप उसे बढ़ने दे रहे हैं? क्या आप रोज़ाना अपनी ज़िंदगी में उसके नूर और उसकी क़ुव्वत का तजरिबा कर रहे हैं? अगर नहीं तो उसे पुकारें। मिन्नत करें कि मुझे छू दे। मुझ पर अपनी मुहब्बत और अपनी ताक़त उंडेल दे ताकि मेरा कमज़ोर ईमान बढ़ता जाए, मज़बूत होता जाए।

► **क्या शागिर्द ख़ुश थे?**

नहीं, उनके रोंगटे खड़े हो गए। लेकिन इतना उन्होंने सीख लिया था कि उस्ताद के पीछे चलना ही है चाहे ख़तरा कितना क्यों न हो। तोमा बोला, "चलो, हम भी वहाँ जाकर उसके साथ मर जाएँ।" तोमा यह बात मज़ाक़ में नहीं कह रहा था। सब जानते थे कि यरूशलम के क़रीब आना अपनी जान हथेली पर रखने के बराबर है।

वहाँ पहुँचकर मालूम हुआ कि लाज़र को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं। यह गाँव यरूशलम के क़रीब ही था इसलिए बहुत-से यहूदी मर्था और मरियम को तसल्ली देने के लिए आए हुए थे। इस मौक़े पर ईमान का एक और पहलू उभर आया :

पूरा भरोसा रखो

मर्था को इत्तला मिली कि उस्ताद पहुँचकर बाहर इंतज़ार कर रहा है तो वह उसे मिलने गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही। मर्था ने कहा, "ख़ुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी अल्लाह आपको जो भी माँगेंगे देगा।"

► **अब ध्यान दें। मर्था ने क्या दो बातें कहीं?**

- पहले, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।
- लेकिन दूसरी बात इससे बढ़कर है। वह बोली, मैं जानती हूँ कि अब भी अल्लाह आपको जो भी माँगेंगे देगा। मर्था का अपने आक़ा पर बड़ा ईमान है। वह शिकायत नहीं करती, क्योंकि अब भी मर्था को उस पर पूरा भरोसा है।

► **मर्था को इतना पक्का भरोसा क्यों है?**

उसने पहचान लिया है कि ख़ुदा बाप उसे जो माँगेगा देगा। ईसा मसीह अपनी पूरी ज़िंदगी से ख़ुदा बाप को जलाल दे रहा है इसलिए ख़ुदा बाप उसकी सुनता है।

ईसा मसीह ने फ़रमाया, “तेरा भाई जी उठेगा।”

मर्था ने जवाब दिया, “जी, मुझे मालूम है कि वह क़ियामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।”

तब ईसा मसीह ने एक चौंका देनेवाली बात कही,

> क़ियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा, चाहे वह मर भी जाए। और जो ज़िंदा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। (यूहन्ना 11:25-26)

► **जो ईमान रखे उसे क्या हासिल होगा?**

ज़िंदगी। अबदी ज़िंदगी। मतलब है कि

उसे क़बूल करो जो ज़िंदगी है

► **क़ियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ। ईसा मसीह इससे क्या कहना चाहता है?**

अबदी ज़िंदगी उसी के ज़रीए मिलती है। यह किसी और से हासिल नहीं हो सकती। इसी लिए कि हम अपनी कोशिशों से जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते। हमारी हालत कमज़ोर है। हम जो नापाक हैं अल्लाह के हुज़ूर आ नहीं सकते। हमारी सिफ़ारिश करने से कुछ नहीं होता, क्योंकि सिफ़ारिश से हम पाक नहीं हो जाएँगे। सिफ़ारिश से हम वह रूहानी हालत नहीं पाएँगे जिससे हम मंज़ूर हो जाएँगे। यही वजह है कि ईसा मसीह ने हमारे वास्ते अपनी जान दी। उसने अपने ऊपर वह सज़ा ली जो हमें उठानी थी। न सिर्फ़ यह बल्कि उसके मरने और जी उठने के बाद उसने रूहुल-क़ुद्स भेज दिया जो सच्चे ईमानदार के दिल में रहकर उसे तसल्ली और हिदायत देता रहता है। यह चीज़ें सिफ़ारिश से पैदा नहीं होतीं।

► **लेकिन इसका क्या मतलब है कि जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा? क्या वह इस दुनिया में नहीं मरेगा?**

यहाँ दो सच्चाइयाँ एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं, एक जिस्मानी और दूसरी रूहानी। जो उस पर ईमान रखे वह इस दुनिया में रहते हुए यह अबदी ज़िंदगी पाता है। कह लें कि अबदी ज़िंदगी का बीज ईमानदार के दिल में डाला जाता है। जिस्म कितना घटता और गलता क्यों न

जाए लेकिन यह बीज कभी नहीं गलता। यह बीज बढ़ता जाता है, रूहानी फल लाता रहता है और आख़िर में जब जिस्म गुज़र जाए ईमानदार को ख़ुदा के हुज़ूर ले जाता है। यही है हमारी ठोस उम्मीद। यही वजह है कि ईसा मसीह फ़रमाता है कि जो ज़िंदा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा।

उस्ताद तो माहिर डाक्टर है। उसने मर्था के दिल में तेज़ नज़र डालकर पूछा, "मर्था, क्या तुझे इस बात का यक़ीन है?" उसे हमेशा हमारी रूहानी हालत की फ़िकर रहती है।

मर्था ने जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, मैं ईमान रखती हूँ कि आप ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं, जिसे दुनिया में आना था।"

बेशक मर्था यह बातें पूरे तौर से नहीं समझती, मगर देखो उसका ईमान! वह जवाब देती है कि आप ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं। आप वही हैं जिसे हमें नजात देने के लिए आना था। अब वह वापस घर में खिसक गई ताकि चुपके से मरियम को बुलाए। उस्ताद के साथ रिफ़ाक़त बाक़ी लोगों से फ़रक़ थी, गहरी थी। उसके हुज़ूर हर पल क़ीमती था। इसलिए वह तड़प रही थी कि मातम करनेवालों के शोरो-ग़ुल से दूर होकर मरियम के साथ अपने आक़ा की धूप सेंके। उसने मरियम से कहा, उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे हैं।

मरियम एकदम उठ खड़ी हुई और फ़ुरती से गाँव से बाहर उस जगह गई जहाँ ईसा मसीह अभी तक था। अगर कोई तसल्ली दे सके तो उसका

आक़ा। अगर कोई बोझ हलका कर पाए तो उसका आक़ा। दूसरे सब लोग यह देखकर उसके पीछे हो लिए। उन्हें लग रहा था कि मरियम क़ब्र पर जा रही है। ईसा मसीह को देखते ही वह उसके पाँवों में गिर गई और बोली, "ख़ुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।" वह फूटकर रोने लगी। दूसरे हमदर्दी से साथ साथ रोने लगे।

हाय, मौत कितनी तलख़ है। एक लमहे में इनसान इस दुनिया और तमाम अज़ीज़ों से जुदा हो जाता है। न वह रुपए-पैसे, न जूते-कपड़े अपने साथ ले सकता है। तनहा ही वह कूच कर जाता है। तब क्या होगा? दूसरी तरफ़ उसके अज़ीज़ बैठे रो पड़ते हैं। उनका दिल छिद जाता है। कौन यह प्यारी जान वापस लाएगा?

ईसा मसीह को बड़ी रंजिश हुई। उसने पूछा, तुमने उसे कहाँ रखा है?

उन्होंने जवाब दिया, आएँ, देख लें।

तब ईसा मसीह रो पड़ा।

► **यह हमें उसके बारे में क्या सिखाता है?**

हम इनसान उसे इतने प्यारे हैं कि वह हमारे हर दुख-सुख में शरीक होता है। जब हम ख़ुश हों तो वह भी ख़ुश, जब हम रोएँ तो वह भी रोता है।

लोग यह देखकर काफ़ी मुतअस्सिर हुए। "देखो, वह उसे कितना अज़ीज़ था," उन्होंने कहा। लेकिन कुछ ने कहा, "इस आदमी ने अंधे को शफ़ा दी। क्या यह लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता था?"

तब ईसा मसीह दुबारा रंजीदा होकर क़ब्र पर आया। यह एक ख़ास क़ब्र थी। एक ग़ार जिसके मुँह पर पत्थर रखा गया था। ईसा मसीह बोला, "पत्थर को हटा दो।"

मर्था बोली, "ख़ुदावंद, बदबू आएगी, क्योंकि उसे यहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।"

यह देखने में आया है कि कोई सबके सामने मुरदा लगे मगर कुछ घंटों के बाद दुबारा हरकतें करने लगे। दिल धड़कने लगता, साँस चल पड़ती है। यहाँ ऐसी कोई बात नहीं थी। चार दिन के बाद लाज़र पक्का मुरदा था।

इसका एक और पहलू है : पहले मर्था तो ईसा मसीह की बात मान गई थी कि वह क़ियामत और ज़िंदगी है, कि वह अबदी ज़िंदगी का सरचश्मा है। लेकिन अब क़ब्र की नज़र में उसका यह यक़ीन माँद पड़ गया। क्या ईसा मसीह सचमुच लाज़र को जिला सकता है?

ईसा मसीह ने उससे कहा, "क्या मैंने तुझे नहीं बताया कि अगर तू ईमान रखे तो अल्लाह का जलाल देखेगी?" तब उन्होंने पत्थर को मुँह से हटा दिया। फिर ईसा मसीह ने अपनी नज़र उठाकर कहा, "ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है। मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैंने यह बात पास खड़े लोगों की ख़ातिर की, ताकि वह ईमान लाएँ कि तूने मुझे भेजा है।" फिर वह ज़ोर से पुकार उठा, "लाज़र, निकल आ!"

► **फिर क्या हुआ?**

मुरदा निकल आया। अभी तक उसके हाथ और पाँव पट्टियों से बँधे हुए थे जबकि उसका चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा मसीह ने उनसे कहा, "इसके कफ़न को खोलकर इसे जाने दो।"

लाज़र की बहनें कितनी ख़ुश हुई होंगी! उनका भाई मौत की दुनिया से वापस आ गया था!

इस पूरे सिलसिले से हम एक मरकज़ी बात सीखते हैं।

► **क्या सीखते हैं?**

यह कि ईसा मसीह ज़िंदगी का मंबा है। वही जी उठने का वसीला है। शायद लाज़र बूढ़ा हो गया। तो भी उसे दुबारा मरना ही था। लेकिन लाज़र के अंदर अबदी ज़िंदगी का वह बीज था जो ईसा मसीह ने उसमें डाल दिया था। इस दुनिया से कूच कर जाने के बाद यह बीज उसे उठाकर उसके आक़ा के पास ले गया।

► **क्या आपको यह उम्मीद है? क्या यह बीज आपके अंदर है? क्या आप पक्के जानते हैं कि यह बीज आपको मरने के बाद ईसा मसीह की गोद में ले जाएगा जहाँ आप इस दुनिया की तगो-दो से आज़ाद होकर सुकून और इतमीनान से बसेंगे?**

एक आख़िरी पहलू है जिस पर हमें ध्यान देना है : यह काम देखकर सब ख़ुश न हुए। कुछ उसके ख़िलाफ़ हुए। आइए हम देखें

इनकार करनेवालों का जवाब

यह मोजिज़ा देखकर बहुत-से लोग ईसा मसीह पर ईमान लाए। मतलब है वह मान गए कि यही नजात देनेवाला अल-मसीह है। कोई और ऐसा मोजिज़ा नहीं कर सकता। लेकिन कुछ ने बुज़ुर्गों के पास जाकर उन्हें इत्तला दी कि क्या हुआ है।

► **क्या बुज़ुर्ग ख़ुश हुए कि ऐसा मोजिज़ा हुआ है?**

नहीं। वह आपस में कहने लगे, "हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी बहुत-से इलाही निशान दिखा रहा है। अगर हम उसे खुला छोड़ें तो आख़िरकार सब उस पर ईमान ले आएँगे। फिर रोमी आकर हमारे बैतुल-मुक़द्दस और हमारे मुल्क को तबाह कर देंगे।"

► **यह लोग क्यों ख़ुश नहीं थे?**

उन्हें कोई परवाह नहीं थी कि मोजिज़ा हुआ है। उन्हें सिर्फ़ यह फ़िकर थी कि हमारी इज़्ज़त कम हो जाएगी। वह तो रोमी सरकारी अफ़सरों के साथ मिले-जुले थे। लोग ईसा मसीह का इख़्तियार मानें तो हो सकता है कि रोमी सरकार नाराज़ होकर बैतुल-मुक़द्दस और मुल्क को नेस्तो-नाबूद करें।

तब इमामे-आज़म बोल उठा। उसका नाम कायफ़ा था। उसने कहा, "आप कुछ नहीं समझते और इसका ख़याल भी नहीं करते कि इससे पहले कि पूरी क़ौम हलाक हो जाए बेहतर यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।"

उसका मतलब था कि ईसा मसीह को ख़त्म करना चाहिए, इससे पहले कि पूरा मुल्क ख़त्म हो जाए। लेकिन हक़ीक़त में ख़ुदा उसके वसीले से पेशगोई कर रहा था। ईसा मसीह उन सबके लिए मरेगा जो उस पर ईमान लाएँगे, यहूदियों के लिए भी और दूसरों के लिए भी।

उस दिन से वह पक्के इरादे के साथ ईसा मसीह को क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे। कितनी अजीब बात! एक तरफ़ ईसा मसीह ने एक मुरदे को ज़िंदगी दी। दूसरी तरफ़ लोग यह देखकर उसे मौत के घाट उतारने की साज़िशें करने लगे। एक तरफ़ अबदी ज़िंदगी की खुली दावत, दूसरी तरफ़ क़त्लो-ग़ारत का पक्का इरादा। एक तरफ़ अपनी जान देने की तैयारी, दूसरी तरफ़ अपनी कुरसी मज़बूत करने की सियासत।

► **सवाल यह है : आप ईसा मसीह के बारे में क्या सोचते हैं?**

शायद आप मानें कि ईसा मसीह अच्छा इनसान है। यह काफ़ी नहीं है। इससे आपको अबदी ज़िंदगी नहीं मिलेगी। सच्चे ईमान की ज़रूरत है। वह ईमान जो अपनी ज़िंदगी से ख़ुदा को जलाल देकर नूर में चलता है। ऐसा ईमान बढ़ता रहता है, अपने आक़ा पर पूरा भरोसा रखता है। सबसे बढ़कर यह कि वह अबदी ज़िंदगी का बीज अपने अंदर पाता है। वह अबदी ज़िंदगी जो सिर्फ़ ईसा मसीह दे सकता है।

इंजील, यूहन्ना 11,1-54

लाज़र की मौत

उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया जिसका नाम लाज़र था। वह अपनी बहनों मरियम और मर्था के साथ बैत-अनियाह में रहता था। यह वही मरियम थी जिसने बाद में ईसा मसीह पर ख़ुशबू उंडेलकर उसके पाँव अपने बालों से ख़ुश्क किए थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था। चुनाँचे बहनों ने ईसा को इत्तला दी, "ख़ुदावंद, जिसे आप प्यार करते हैं वह बीमार है।"

जब ईसा को यह ख़बर मिली तो उसने कहा, "इस बीमारी का अंजाम मौत नहीं है, बल्कि यह अल्लाह के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इससे अल्लाह के फ़रज़ंद को जलाल मिले।"

ईसा मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता था। तो भी वह लाज़र के बारे में इत्तला मिलने के बाद दो दिन और वहीं ठहरा। फिर उसने अपने शागिर्दों से बात की, "आओ, हम दुबारा यहूदिया चले जाएँ।"

शागिर्दों ने एतराज़ किया, "उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहूदी आपको संगसार करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?"

ईसा ने जवाब दिया, “क्या दिन में रौशनी के बारह घंटे नहीं होते? जो शख़्स दिन के वक़्त चलता-फिरता है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्योंकि वह इस दुनिया की रौशनी के ज़रीए देख सकता है। लेकिन जो रात के वक़्त चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्योंकि उसके पास रौशनी नहीं है।” फिर उसने कहा, “हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जाकर उसे जगा दूँगा।” शागिर्दों ने कहा, “ख़ुदावंद, अगर वह सो रहा है तो वह बच जाएगा।”

उनका ख़याल था कि ईसा लाज़र की फ़ितरी नींद का ज़िक्र कर रहा है जबकि हक़ीक़त में वह उसकी मौत की तरफ़ इशारा कर रहा था। इसलिए उसने उन्हें साफ़ बता दिया, “लाज़र वफ़ात पा गया है। और तुम्हारी ख़ातिर मैं ख़ुश हूँ कि मैं उसके मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्योंकि अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उसके पास जाएँ।”

तोमा ने जिसका लक़ब जुड़वाँ था अपने साथी शागिर्दों से कहा, “चलो, हम भी वहाँ जाकर उसके साथ मर जाएँ।”

ईसा क़ियामत और ज़िंदगी है

वहाँ पहुँचकर ईसा को मालूम हुआ कि लाज़र को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं। बैत-अनियाह का यरूशलम से फ़ासला तीन

किलोमीटर से कम था, और बहुत-से यहूदी मर्था और मरियम को उनके भाई के बारे में तसल्ली देने के लिए आए हुए थे।
यह सुनकर कि ईसा आ रहा है मर्था उसे मिलने गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही। मर्था ने कहा, "ख़ुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी अल्लाह आपको जो भी माँगेंगे देगा।"
ईसा ने उसे बताया, "तेरा भाई जी उठेगा।"
मर्था ने जवाब दिया, "जी, मुझे मालूम है कि वह क़ियामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।"
ईसा ने उसे बताया, "क़ियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा, चाहे वह मर भी जाए। और जो ज़िंदा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे इस बात का यक़ीन है?"
मर्था ने जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, मैं ईमान रखती हूँ कि आप ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं, जिसे दुनिया में आना था।"

ईसा रोता है

यह कहकर मर्था वापस चली गई और चुपके से मरियम को बुलाया, "उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे हैं।" यह सुनते ही मरियम उठकर ईसा के पास गई। वह अभी गाँव के बाहर उसी

जगह ठहरा था जहाँ उसकी मुलाक़ात मर्था से हुई थी। जो यहूदी घर में मरियम के साथ बैठे उसे तसल्ली दे रहे थे, जब उन्होंने देखा कि वह जल्दी से उठकर निकल गई है तो वह उसके पीछे हो लिए। क्योंकि वह समझ रहे थे कि वह मातम करने के लिए अपने भाई की क़ब्र पर जा रही है।

मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे देखते ही वह उसके पाँवों में गिर गई और कहने लगी, "ख़ुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।"

जब ईसा ने मरियम और उसके साथियों को रोते देखा तो उसे बड़ी रंजिश हुई। मुज़तरिब हालत में उसने पूछा, "तुमने उसे कहाँ रखा है?"

उन्होंने जवाब दिया, "आएँ ख़ुदावंद, और देख लें।"

ईसा रो पड़ा। यहूदियों ने कहा, "देखो, वह उसे कितना अज़ीज़ था।"

लेकिन उनमें से बाज़ ने कहा, "इस आदमी ने अंधे को शफ़ा दी। क्या यह लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता था?"

लाज़र को ज़िंदा कर दिया जाता है

फिर ईसा दुबारा निहायत रंजीदा होकर क़ब्र पर आया। क़ब्र एक ग़ार थी जिसके मुँह पर पत्थर रखा गया था। ईसा ने कहा, "पत्थर को हटा दो।"

लेकिन मरहूम की बहन मर्था ने एतराज़ किया, "ख़ुदावंद, बदबू आएगी, क्योंकि उसे यहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।"
ईसा ने उससे कहा, "क्या मैंने तुझे नहीं बताया कि अगर तू ईमान रखे तो अल्लाह का जलाल देखेगी?" चुनाँचे उन्होंने पत्थर को हटा दिया। फिर ईसा ने अपनी नज़र उठाकर कहा, "ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है। मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैंने यह बात पास खड़े लोगों की ख़ातिर की, ताकि वह ईमान लाएँ कि तूने मुझे भेजा है।" फिर ईसा ज़ोर से पुकार उठा, "लाज़र, निकल आ!" और मुरदा निकल आया। अभी तक उसके हाथ और पाँव पट्टियों से बँधे हुए थे जबकि उसका चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा ने उनसे कहा, "इसके कफ़न को खोलकर इसे जाने दो।"

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदी

उन यहूदियों में से जो मरियम के पास आए थे बहुत-से ईसा पर ईमान लाए जब उन्होंने वह देखा जो उसने किया। लेकिन बाज़ फ़रीसियों के पास गए और उन्हें बताया कि ईसा ने क्या किया है। तब राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदी अदालते-आलिया का इजलास मुनअक़िद किया। उन्होंने एक दूसरे से पूछा, "हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी बहुत-से इलाही निशान दिखा रहा

है। अगर हम उसे खुला छोड़ें तो आख़िरकार सब उस पर ईमान ले आएँगे। फिर रोमी आकर हमारे बैतुल-मुक़द्दस और हमारे मुल्क को तबाह कर देंगे।”

उनमें से एक कायफ़ा था जो उस साल इमामे-आज़म था। उसने कहा, “आप कुछ नहीं समझते और इसका ख़याल भी नहीं करते कि इससे पहले कि पूरी क़ौम हलाक हो जाए बेहतर यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।” उसने यह बात अपनी तरफ़ से नहीं की थी। उस साल के इमामे-आज़म की हैसियत से ही उसने यह पेशगोई की कि ईसा यहूदी क़ौम के लिए मरेगा। और न सिर्फ़ इसके लिए बल्कि अल्लाह के बिखरे हुए फ़रज़ंदों को जमा करके एक करने के लिए भी।

उस दिन से उन्होंने ईसा को क़त्ल करने का इरादा कर लिया। इसलिए उसने अब से अलानिया यहूदियों के दरमियान वक़्त न गुज़ारा, बल्कि उस जगह को छोड़कर रेगिस्तान के क़रीब एक इलाक़े में गया। वहाँ वह अपने शागिर्दों समेत एक गाँव बनाम इफ़राईम में रहने लगा।